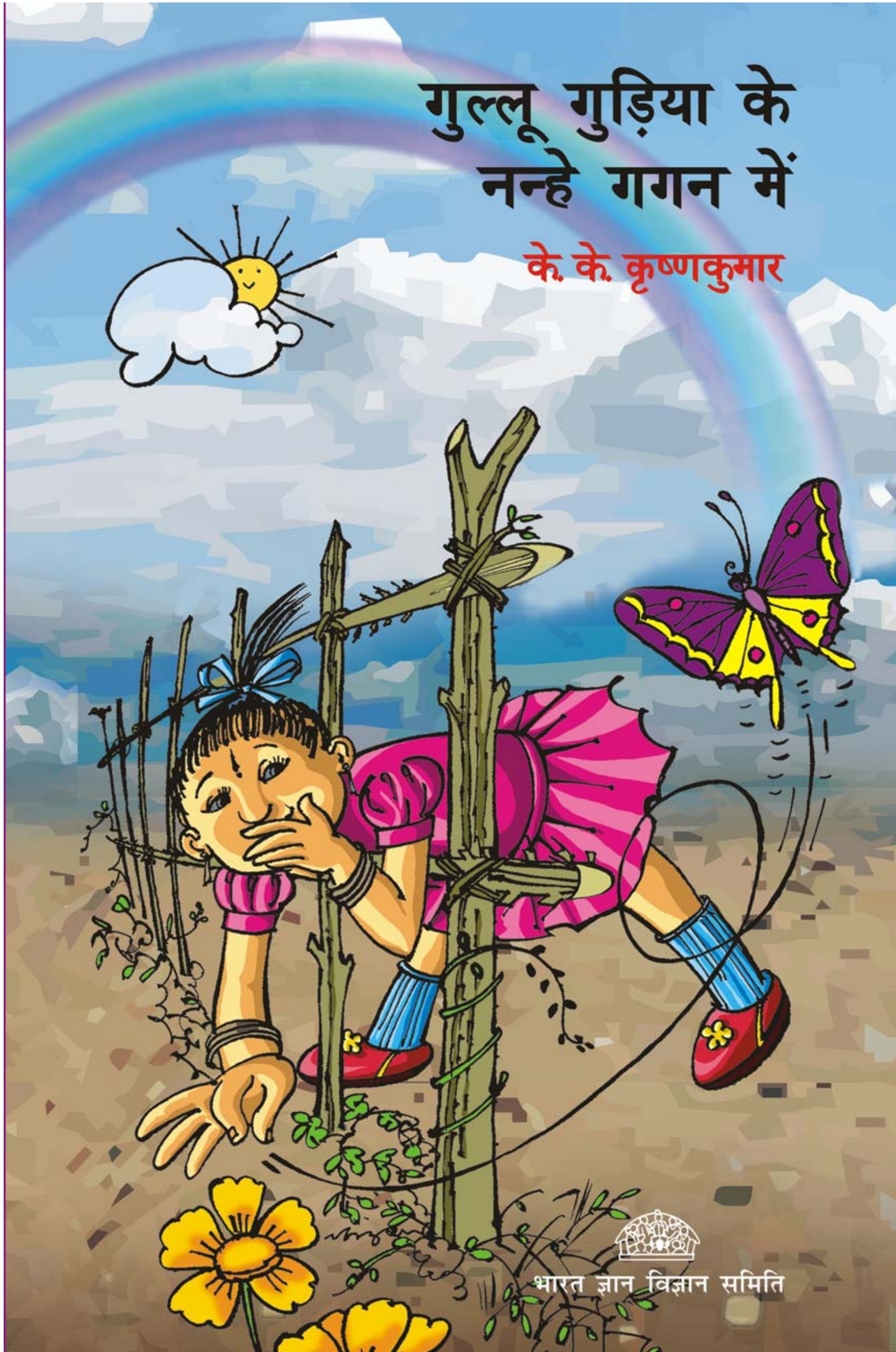

गुल्लू गुड़िया के
नन्हे गगन में
के. के. कृष्णकुमार
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

गुल्लू गुड़िया के नन्हे गगन में

के. के. कृष्णकुमार





भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने 'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है। इस आंदोलन का मकसद आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।



गुल्लू गुड़िया के नन्हे गगन में	**Gulloo Gudiya Ke Nanhe Gagan Men**
के.के. कृष्णाकुमार	***K.K. Krishnakumar***
कॉपी संपादक	***Copy Editor***
राधेश्याम मंगोलपुरी	Radheshyam Mangolpuri
रेखांकन	***Illustration***
विजयन नय्यत्तिंकारा	Vijayan Neyyattinkara
ग्राफिक्स	***Graphics***
अभय कुमार झा	Abhay Kumar Jha
कवर	***Cover***
गॉडफ्रे दास	Godfrey Das
प्रथम संस्करण	***First Edition***
जनवरी 2008	January 2008
सहयोग राशि	***Contributory Price***
10 रुपये	Rs.10.00
मुद्रण	***Printing***
सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	Sun Shine Offset New Delhi - 110 018

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS JAN 2008 2K 1000 NJVA 0131/2008



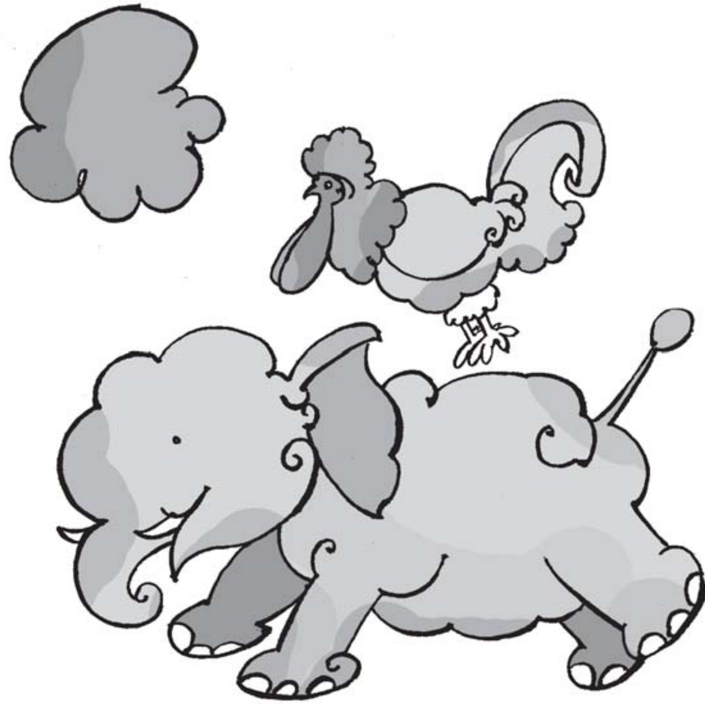


गुल्लू गुड़िया के

नन्हे गगन में







गुल्लू गुड़िया के नन्हे गगन में
हुई एक दिन घोर लड़ाई
अब मैं सुनाता हूं उसकी कहानी
सुनना ध्यान लगाकर भाई

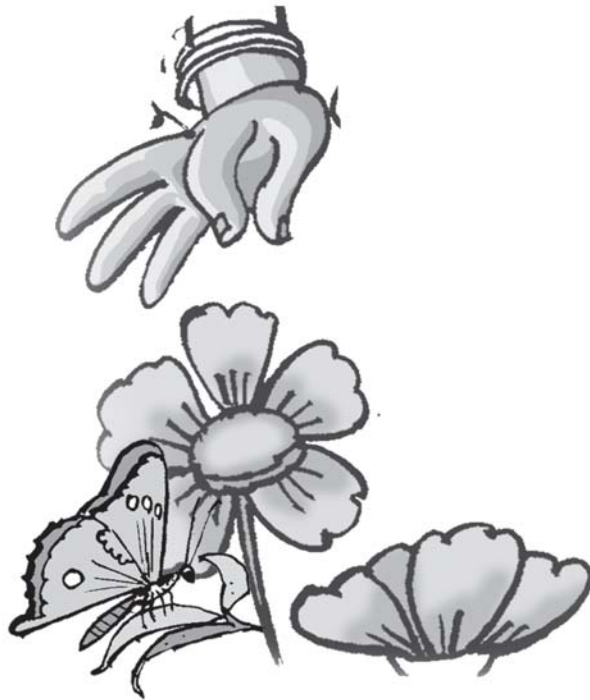
उस दिन शाम को मुन्नी गुड़िया
एक तितली के पीछे पड़ी थी
सुन्दर तितली, प्यारी तितली
सात रंग के पंखों वाली
नानी–फूल की गोद में बैठी
थी मीठी संगीत सुनाती





तभी वहां गुल्लू गुड़िया
धीरे-धीरे, चुपके-छिपके
एक हाथ को मुंह पर रखके
दूसरे की दो प्यारी अंगुलियां उठाके
सुन्दर तितली के पंखों की ओर चली
धीरे-धीरे... धीरे... धीरे...

सोच रही थी मन ही मन–
छुऊं न छुऊं, पकड़ूं न पकड़ूं
तभी बीच में नाना–हवा जी
अपनी मोटी लाठी उठाके
आए नानी–फूल के आगे
फहराया अपनी मूंछों को
और एक लम्बा, तगड़ा–सा बाल उड़ाके



छुला दिया गुल्लू गुड़िया की
प्यारी नाक से…

फिर क्या हुआ ?

आक् छीं ! छींक ! छींक
एक नहीं, दो नहीं, छींक… छींक… छींक
गुल्लू की छींक की आवाज सुनके
बेचारी तितली एकदम घबराई





नाना – हवा जी जरा मुस्कुराए
नानी – फूल की पंखुड़ी सिहराई

फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ…

बेचारी तितली अपने पंख फैलाके
ऊंचे गगन की ओर उठाके
उड़ने लगी, उड़ने लगी…
नीचे न देखा, पीछे न देखा
बाएं न देखा, दाएं न देखा



नीचे बगीचे के फूलों को छोड़ा
ऊंचे पहाड़ों, पेड़ों को छोड़ा
बेचारी तितली उड़ती रही
गुल्लू की छींक की आवाज फिर भी
कानों में उसके पड़ती रही…

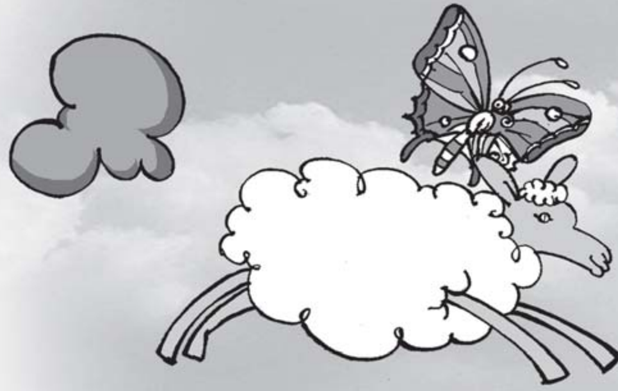
फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ…

नन्हे गगन के बीच पहुंचकर
थमी जरा तितली, देखा चारों ओर…
बेचारी के पंखों में, पैरों में दर्द था
फिर भी, सब कुछ ठीक था, शान्त था
तो अब थोड़ा आराम करूं सोचा तितली ने

फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ…

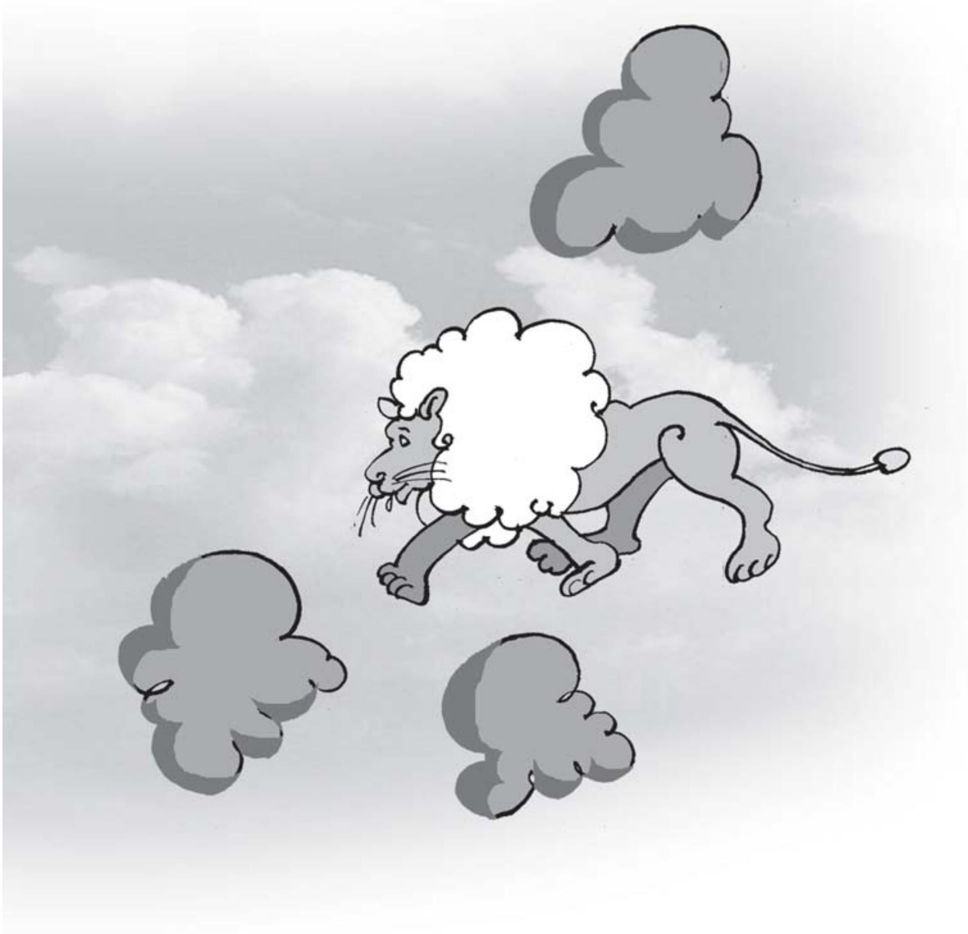
तितली बेचारी, अपने थके हुए
पंख सिकोड़कर धीरे-धीरे
एक मुन्ने-बादल के कान पर जा बैठी





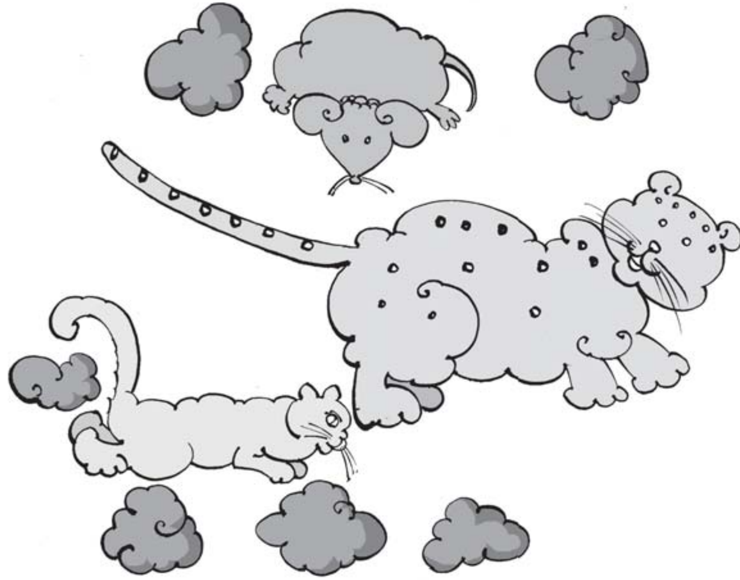
कि शुरू हुई फिर गड़बड़ सारी
तितली बैठी थी एक काले-काले
बकरी-बादल के कानों के ऊपर...
हुई जरा सुर-सुर, फुर-फुर

काले बादल के कानों में
मची गुदगुदी... खूब गुदगुदी
गुदगुदी से एकदम घबराकर
उछल पड़ा और भागा आगे
उसके पीछे... पीछे... पीछे...
एक नहीं, दो नहीं, एक हजार बादल
आगे-आगे उछलने लगे...



फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ...

काला बादल, बकरी–बादल
इधर–उधर कूदा चिल्लाकर
फिर तो भैया, सब कुछ गड़बड़
शुरू हो गई भारी भगदड़
एक डरा–सा मुर्गा–बादल
सोए हुए एक शेरनी–बादल के
सिर के ऊपर जा कूदा



शेरनी-बादल के सिर पर तो
हुआ सवार गजब-सा गुस्सा
गुस्सा, गुस्सा, गुस्सा ही गुस्सा
शेरनी-बादल गुस्से में गुर्राया, गरजा
गरज-गरजकर आगे आया
हाथी-बादल सोते-सोते नींद से जागा...

फिर क्या हुआ, देखो फिर क्या हुआ...

शुरू हो गई घोर लड़ाई
शेरनी-बादल, हाथी-बादल



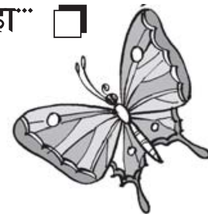
काला बादल, पीला बादल
मोटा बादल, छोटा बादल
आपस में चिल्ला–चिल्लाकर
शोर मचाकर
उलझ पड़े एक–दूसरे से
घोर लड़ाई लड़ी गई दिन–भर
लड़ते–लड़ते थक गए बादल
सबको खूब पसीना आया
इतनी सारी बूंदें बरसीं
जैसे बारिश का मौसम आया…

बेचारी तितली ने फिर से डरते–डरते
खोल लिया अपने पंखों को
उसके पंखों के सातों रंग



फैल गए हर ओर गगन में
और वह बेचारी सुन्दर तितली
बदल गई एक प्यारे से इन्द्रधनुष में

गुल्लू गुड़िया के नन्हे गगन में
कितने बादल, कितने बादल
एक नहीं, दो नहीं... अनगिनत, हा... हा...
दूर एक कोने में बकरी–बादल
एक नहीं, दो नहीं... अनगिनत, हा... हा...
दूसरे कोने में शेरनी–बादल
एक नहीं, दो नहीं... अनगिनत, हा... हा...
बिल्ली–बादल देरव के भागे
डरकर नन्हे चूहे–बादल
एक नहीं, दो नहीं...अनगिनत, हा... हा... हा... ❐





नव जनवाचन आंदोलन

एक सुन्दर प्यारी तितली नानी – फूल की गोद में बैठी थी। मुन्नी गुड़िया ने उसे पकड़ने की कोशिश की। तभी उसे छींक आ गई। छींक की आवाज सुनकर तितली उड़ गई और बादलों के बीच पहुंच गई।... वहां मुर्गा – बादल, शेरनी – बादल, बकरी – बादल... खूब सारे बादलों के बीच घोर लड़ाई छिड़ गई। फिर क्या हुआ, तितली का क्या हुआ, पूरा किस्सा पढ़िए इस कविता में।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति